अंक 38

वर्ष-10वां

अप्रैल-जून 2016

चहकती चेतना

राजा सोमप्रभ के साथ युवराज श्रेयांसकुमार व रानी द्वारा ऋषभमुनिराज को इक्षुरस का आहारदान

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

JULY - SEPT. 2015

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	1
2.	जन्म दिवस	2
3.	करम का खेल	3
4.	अजब-गजब दुनियां.....	4
5.	मेरी भावना	5
6.	कविता	6
7.	शेर बना भगवान	7
8.	जैन धर्म के प्रतीक	8-9
9.	कहान गुरु - संस्मरण	10
10.	श्री कण्ठ राजा को वैराग्य	11
11.	गौरवशाली इतिहास.....	12
12.	एक सेल्फी अरिहंतो.....	13
13.	प्रोटीन पाउडर.....	14
14.	कहानी - पागलपन	15
15.	प्रेरक प्रसंग	16
16.	नौकर से मिली शिक्षा	17
17.	सदस्यगण../प्रतिभा सम्पन्न	18
18.	आपके प्रश्न.....	19
19.	समाचार	20
20.	खेलों से बीमार होते बच्चे	21
21.	सावधान ! कोल्ड	22-23
22.	अष्ट मंगल द्रव्य.....	24
23.	एक ऐसा घर	25
24.	चार माह की बच्ची.....	26
25.	1करोड़ की लॉटरी	27
26.	जगन्नाथपुरी	28
27.	कॉमिक्स	29-32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं। पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर बचत खाता क्र.- 1937

संपादकीय

असफलता जीवन का एक छोटा सा अंश है, सम्पूर्ण जीवन नहीं

प्यारे बच्चो और पाठको,

स्नेहपूर्ण जय जिनेन्द्र।

आपकी परीक्षायें समाप्त हो गईं होंगी और आप अगली कक्षा की तैयारी कर रहे होंगे। कुछ बच्चे इन परीक्षाओं में असफल हुये होंगे और कुछ बच्चों के नम्बर कम आये होंगे। हमें ये बात अच्छी तरह समझना होगी कि हर बच्चा नम्बर 1 पोजीशन पर नहीं आ सकता, कोई न कोई दूसरे या तीसरे भी आयेगा। आज देश के कई बच्चे परीक्षा की अच्छी तैयारी न होने से परीक्षा के पहले या परीक्षा के बाद नम्बर कम आने से गलत कदम उठा रहे हैं। उन्हें लगा कि यदि परीक्षा में फेल हो जायेंगे तो पूरा जीवन ही बेकार हो जायेगा । हमें ये समझना होगा कि हर कार्य में सफलता या असफलता जीवन का एक छोटा सा हिस्सा है। इस छोटी सी बात के लिये अपना अमूल्य जीवन समाप्त करना पागलपन ही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व के अनेक सफल व्यक्तियों विद्यालय की पढ़ाई का कोई योगदान नहीं था। असफलताओं से घबरायें नहीं, हर असफलता, सफलता का मंत्र लेकर आती है।

विश्व प्रसिद्ध फोर्ड के मालिक हेनरी फोर्ड कभी स्कूल ही नहीं गये, अब्राहम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति बने, ऑस्कर पुरस्कार विजेता अभिनेत्री मरली मेटलिन बचपन से ही बहरी और अस्वस्थ थी, बल्ब का अविष्कार करने वाले थामस अल्वा एडीसन को बचपन में मंदबुद्धि कहा जाता था, विश्व प्रख्यात भारतीय क्रिकेटर सचिन तेन्दुलकर ने मात्र 12 वीं पास हैं, भारतीय टीम के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी मात्र 11 वीं पास हैं, विश्व की प्रसिद्ध पेय कम्पनी पेप्सी दो बार दिवालिया घोषित हो चुकी थी, इन्फोसिस के चेयरमेन श्री नारायणमूर्ति के पास धन नहीं था और उन्होंने अपनी पत्नी के गहने बेचकर काम शुरु किया था, अमेरिका पूर्व राष्ट्रपति रुजवेल्ट के दोनों पैर काम नहीं करते थे। ये कुछ नाम उन लोगों के हैं जो विपरीत परिस्थितियों में सफल हुये। ऐसे सैकड़ों नाम हैं जो हमें निराश नहीं होने देते।

और सबसे बड़ी बात हम सर्वज्ञ भगवान के उपासक हैं। प्रत्येक सफलता और असफलता का सम्बन्ध हमारे कर्म उदय से है तो हम उदास क्यों हों हमें जैन कुल, जिनवाणी माता मिली, ये तो हमारे महान भाग्य का उदय है।

इसलिये निराश न हो, उदास न हो, बस न्याय-नीति से अपने कर्तव्यपथ पर बढ़ते रहो और किसी भी परिस्थिति में महान जिनधर्म और उसके सिद्धान्तों का न भूलो।

आपका विराग

जन्म-दिवस

जन्म-मरण के अभाव की भावना भाने में ही जन्मदिवस मनाने की सार्थकता है। जन्म-दिवस की खुशियों में देह रहित शुद्धात्मा को न भूलिये।

एक जानने योग्य है, जिनवर का संदेश।
ज्ञायक में सर्वस्व है, जिनवाणी संदेश।।

ज्ञायक संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर गुज. 25 जनवरी

महाभाग्य से मिल गये, श्री जिनेन्द्र भगवन्त।
विदर्शी निज दर्शन करो, हो प्रज्ञा जयवन्त।।

विदर्शी नितिन जैन, नांगलराया, दिल्ली 26 मार्च

शौनक श्री जिनमत सुनो, इससे हो कल्याण।
सदाचार और ज्ञानमय, पाओ पद निर्वाण।।

शौनक सागर मेहता, बारामती महा., 17 अप्रेल

जिनपथ ही है स्वस्तिमय, श्री मुनि कहें महान।
ईर्या जिनश्रुति ही सुनो, हो विराग अम्लान।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल

तीन लोक में श्रेष्ठ है, स्वानुभूति का कार्य।
पावन नर पर्याय से, पाना निज परमार्थ।।

स्वानुभूति स्वप्निल शाह, पुणे 23 मई

नमन पंचपरमेष्ठी को, नमन हो आतमराम।
भव भ्रमण का अंत हो, पाओ शिवपुर धाम।।

नमन प्रीतम शाह, दिल्ली 2 जुलाई

यदि आप अपने परिवार के किसी बालक-बालिका के जन्म-दिवस पर शुभकामनायें प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो आप उसकी फोटो, जन्मतिथि, उम्र हमें ईमेल Kahansandesh@gmail.com / व्हाट्सएप (9300642434) द्वारा भेज सकते हैं व आप सहयोग राशि अपनी स्वेच्छानुसार हमारे बैंक खाते में जमा करवा सकते हैं।

करम का खेल मिटे न रे भाई...

बांग्लादेश के खुलना शहर में रहने वाले 25 साल के अबुल बजन्दर एक विचित्र बीमारी का शिकार हो गया है जिसके कारण उसके हाथ पेड़ के तने की तरह हो गये हैं। ये बीमारी स्किन सम्बन्धी मेडीकल डिस आर्डर से जुड़ी हुई है जिसका का नाम एपिडर्मोडाइस्प्लासिया है। अबुल को यह बीमारी पिछले सात साल से है।

आपको फोटो में दो बूढ़े लोग दिख रहे होंगे परन्तु ये बड़ी उम्र के नहीं हैं न ही ये बूढ़े हैं। ये झारखण्ड राज्य की राजधानी रांची में रहने वाले 7 साल की अंजलि और 2 वर्ष का केशव है। डॉक्टर के अनुसार ये क्यूटिस लैक्सा प्रोजेरिया नाम की बीमारी से ऐसा हुआ है। जन्म के समय ये दोनों बच्चे बिल्कुल ठीक थे परन्तु कुछ ही माह बाद इनकी स्किन ढ़ीली होने लगी और ये पूरी तरह से बूढ़े दिखने लगे। इनके पिता शत्रुघ्न रजक और माँ रिंकी देवी ने इनका बहुत इलाज करवाया पर कहीं से भी आराम नहीं मिला। शत्रुघ्न रजक मात्र 4500 प्रतिमाह की कमाई से परिवार का गुजारा करते हैं।

हम भी जाने-अनजाने में न जाने कितने पाप करते हैं और उनके फल का विचार भी नहीं करते । ध्यान रहे ! हँसते-हँसते बांधे हुये कर्मों का फल रोते-रोते भोगना पड़ेगा । अतः हर पल पंच परमेष्ठी और अपनी आत्मा के स्मरण में बीते यही भावना ....

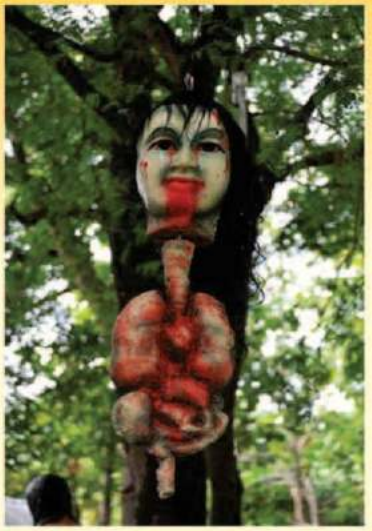

अजब-गजब दुनियां

थाईलैण्ड का नरक लोक

थाईलैण्ड के चियांग मेई में एक ऐसा मंदिर है जिसे नरक लोक कहा जाता है। इस मंदिर में बुरे कामों का फल बताने के लिये झांकी बनाई गईं हैं। इन झांकियों में कढ़ाई में कुछ जीवों को उबालते हुये, किसी के हाथ काटते हुये दिखाया गया है। ये सभी मूर्तियाँ बहुत डरावनी लगती हैं। इसे बनाने वाले बुद्ध के उपासक मॉन्क का कहना था कि वे लोगों को बुरे कामों का फल दिखाना चाहते हैं। कई बेवसाइटस में इसे नर्क म्यूजियम भी कहा गया है। **हैं न अजब बात .....**

पिछले अंक से आगे-

मेरी भावना

(In English)

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करुँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरुँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करुँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करुँ।।4।।

With pride may I never be elated, angry may I feel with none;Thw sight of another's luck may noty make me envious with his lot; May my desire be ever for dealings fair and straight, and may my heart only delight in doing good to the best of my abilities all the days of my life!

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।।
दुर्जन क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

May I always entertain a feeling of friendliness for all living beings in the word; May the spring of sympathy in my heart be ever bubbling for those in agony and affliction; May I never feel angry with thw vile, the vicious and the wrongly - directed; May there be such an adujustment of things that I may always remain tranquil in dealing with them!

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

May my heart ever overflow with love at the sight of virtuous men;
May this mind (of mine) rejoice laways in serving them to the utmost of its power; May I be never ungrteful; May ljealousy never approach me; May my longing be always for assimilating the virtues of others; and May the eyes never alight on their faults!

- To be countined

संकलन - श्री सतीश जैन, जबलपुर
Translation By ; M.P.Jain, Jaipur

आत्मा

नरक में आतम रोता,
सुरग में आतम रोता,
चारों गति में रोता,
मुक्ति में आतम सदा सुखी।
कर्म में आतम मिले नहीं,
देह में आतम मिले नहीं,
राग में आतम मिले नहीं,
ज्ञान में आतम मिले सदा।
कर्म से आतम छूटता,
देह से आतम छूटता,
राग से आतम छूटता,
ज्ञान में आतम रहे सदा।।

- ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन

श्रम

देखो-देखो चींटी चलती, देखो-देखो चींटी चलती।
पंक्ति बनाकर चींटी चलती, श्रम का पाठ पढ़ाती।।
हम जैसे हैं वे भी जीव, उनकी रक्षा करो सदीव।
नीचे देख-देखकर चलना, नहीं दबाना नहीं सताना।।

सहयोग

देखो-देखो कौन गिर गया दौड़ो उसे उठायें।
उसकी मलहम पट्टी करके, उसको सुख पहुँचायें।।
उसका जो सामान गिर गया, उसको तुरन्त उठायें।
यथा शक्ति सहयोग करें हम, अपना फर्ज निभायें।।

- बा. ब्र.रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

शेर बना भगवान

एक दिन जंगल का राजा शेर पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। तभी उसने एक हिरण को वहाँ से जाते हुये देखा। हिरण को देखकर शेर को उसका शिकार करने की इच्छा हुई। वह आगे के पैरों पर खड़ा हो गया, इतने में हिरण ने आहट पाकर पीछे मुड़कर देखा। हिरण अपनी जान बचाने के लिये तेजी से भागा। हिरण को भागता देखकर शेर भी हिरण को मारने के लिये उसकी ओर झपटा। शेर ने तेजी से भागकर हिरण पर हमला कर हिरण को पकड़ लिया और अपने बड़े और नुकीले नाखूनों से हिरण का पेट फाड़ दिया। उसी समय आकाश से अमितकीर्ति और अमितप्रभ नाम के दो दिगम्बर मुनिराज वहाँ से विहार कर रहे थे, उन्होंने देखा कि एक भयंकर शेर हिरण को मारकर उसका मांस खा रहा है।

दोनों मुनिराज नीचे उतरकर शेर के पास आ गये। दोनों मुनिराजों की अत्यंत शांत मुद्रा देखकर शेर आश्चर्य से उन्हें देखने लगा और मांस खाना बंद कर दिया। मुनिराज ने शेर का सुन्दर भविष्य जानकर उसे उपदेश दिया। मुनिराज बोले - हे मृगराज! तुम ये क्या कर रहे हो ? तुम तो निकट भव्य जीव हो और दस भव के बाद भरत क्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर महावीर बनने वाले हो। तुम्हें ये कार्य शोभा नहीं देता। मुनिराज का कल्याणकारी उपदेश सुनकर शेर की आंखों से आंसू बहने लगे। मुनिराज की मधुर वाणी सुनकर शेर ने मन में प्रायश्चित्त किया - "अहो! आज मेरा परम सौभाग्य है जो ऐसे मुनिराजों के दर्शन और वाणी का लाभ मिला।" उसने अपने आत्मस्वरूप का विचार किया और उस शेर को तभी सम्यग्दर्शन हो गया। शेर ने अब मांस खाना बंद कर दिया। भोजन न करने से उसका शरीर कमजोर हो गया। अब वह हिल भी नहीं सकता था। उसे मरा हुआ समझकर कौवे और चील आदि पक्षी उसका मांस खाने लगे। कुछ समय बाद अत्यंत शांतभाव से उस शेर की मृत्यु हो गई।

वह शेर मरकर सौधर्म स्वर्ग में सिंहकेतु देव हुआ। इसके 9 भव के बाद वह शेर का जीव भरत क्षेत्र का अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुआ। बच्चो! समझ में आया कि एक पशु भी आत्मज्ञान के बल पर भगवान बन सकता है। हमें भी आत्मकल्याण करना चाहिये।

जैन धर्म के प्रतीक

अनादि काल से धर्म और दर्शन के साथ प्रतीकों का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। जिसके कारण साहित्य, पाण्डुलिपियों, चित्रकला आदि में इन प्रतीकों को विशेष स्थान दिया गया। प्रतीक सम्पूर्ण संस्कृति व सभ्यता का परिचायक होते हैं। जैन संस्कृति में भी अनेक प्रतीक माने गये हैं, जो कि अनेक धार्मिक रहस्यों और प्राचीन संस्कृति को बतलाते हैं।

जैनधर्म में समवशरण, मानस्तम्भ, चैत्यालय, जिनमंदिर, स्वस्तिक, पंचरंगी ध्वज, धर्मचक्र, श्रीवत्स आदि अनेक चिन्ह प्राप्त होते रहे हैं। आईये हम कुछ जैन प्रतीकों का परिचय प्राप्त करते हैं -

जैनध्वज - यह ध्वज आकार में आयताकार है इसकी लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात 3.2 है। इस ध्वज में पाँच रंग हैं - लाल, पीला, सफेद, हरे और नीले रंग की पट्टियाँ हैं। लाल, हरे,पीले, नीले रंग की पट्टियाँ आकार में समान हैं और सफेद रंग की पट्टी अन्य की अपेक्षा दुगुनी होती है। इसके मध्य में केशरिया रंग का स्वस्तिक बना हुआ है। जैन समाज के सर्वमान्य ध्वज में सफेद रंग - चार घातिया कर्म को नष्ट करने के कारण शुद्ध निर्मलता धारी अरहंत परमेष्ठी का, लाल रंग - अघातिया कर्म के नाशक सिद्ध परमेष्ठी का, पीला रंग- शिष्यों के प्रति वात्सल्य के धारी आचार्य परमेष्ठी का, हरा रंग - प्रेम-विश्वास और विशेष ज्ञान धारी उपाध्याय परमेष्ठी का, नीला रंग - साधना में लीन साधु परमेष्ठी का प्रतीक है।

स्वस्तिक - स्वस्तिक का चिन्ह का प्रयोग सभी मांगलिक कार्यों में किया जाता है। स्वस्तिक का चिन्ह मोहन-जोदड़ो के उत्खनन में अनेक मुहरों पर प्राप्त हुआ है। विद्वानों के अनुसार पाँच हजार वर्ष पूर्व सिन्धु की सभ्यता में स्वस्तिक की पूजा प्रचलित थी । मथुरा के पुरातत्व संग्रहालय में स्थित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर बने हुये सात सर्प फणों में एक पर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित है।

स्वस्तिक अर्थात यह जीव इस लोक में मनुष्य, देव, तिर्यन्च तथा नरक गतियों में भ्रमण करता है। स्वस्तिक के तीन बिन्दु - सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र को दर्शाते हैं। तीन रत्न के

ऊपर अर्धचन्द्र सिद्धशिला का प्रतीक है। अर्धचन्द्र के ऊपर के बिन्दु परम सुख का व्यक्त करते हैं।

तीन लोक - अपनी कमर में हाथ रखकर खड़े हुये पुरुष के आकार की यह रचना तीन लोक की रचना का प्रतीक है।

धर्मचक्र - तीर्थंकर वृषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक का धर्मचक्र जगत में जयवन्त होकर प्रवर्त रहा है। जैन परम्परा में अनेक प्रकार के धर्मचक्रों का वर्णन मिलता है। आचार्य शिवकोटि रचित भगवती आराधना में बारह आरे वाले धर्मचक्र का वर्णन मिलता है। ये बारह आरे जिनवाणी के बारह अंगों के प्रतीक हैं। चौबीस आरे वाला धर्मचक्र चौबीस तीर्थंकरों का प्रतीक है। सोलह आरे वाला धर्मचक्र प्राचीन प्रतिमाओं में मिलता है और यह सोलह कारण भावनाओं का प्रतीक है। महाकवि असग ने वर्द्धमान चरित में हजार किरणों वाले धर्मचक्र का वर्णन किया है जो तीर्थंकरों के विहार के समय उनके आगे-आगे चलता है। हमने चौबीस आरे वाले धर्मचक्र को स्वीकार किया है।

धर्मचक्र

ॐ - यह ॐ अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पंचपरमेष्ठी का प्रतीक है।

श्रीवत्स - श्रीवत्स पुण्यवान महापुरुषों के शरीर का एक चिन्ह है। तीर्थंकरों के वक्ष छाती पर रहने वाला यह श्रीवत्स वात्सल्य का प्रतीक है। जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के वक्ष (छाती) पर यह श्रीवत्स चिन्ह अंकित होता है।

श्री - श्री शब्द बीजाक्षर है और यह शक्ति का प्रतीक माना जाता है। साथ ही श्री को मोक्षलक्ष्मी का भी प्रतीक माना गया है।

श्री

ह्रीं - यह बीज अक्षर कल्याण वाचक है। यह चौबीस तीर्थंकरों का प्रतीक है।

ह्रीं

पीछी- पंच वर्ण वाली मोर के पंख वाली यह पिछी संयम की प्रतीक है। दिगम्बर मुनिराजों के हाथ में यह पिछी सदा रहती है। इसके बिना मुनिराज कहीं गमन नहीं करते। मूलाराधना में के अनुसार इस पिछी के पाँच गुण होते हैं - धूल का ग्रहण नहीं करना, पसीने का ग्रहण नहीं करना, कोमलता, सुकुमारता और हल्कापन।

संस्मरण

चहकती चेतना

स्पष्टता

यह घटना 1910 की है। कहान के बड़े भाई कुंवरजी को धर्म की बिल्कुल रुचि नहीं थी। वे हमेशा अपनी व्यापार बढ़ाने की चतुराई की तारीफ करते थे। यदि उनकी दुकान के सामने से कोई साधु निकलता था तब भी रुपये गिनते रहते या अपने व्यापार में मग्न रहते थे। यह देखकर कानू बोले - कुंवरजी! भाई तुम मरकर ढ़ोर (पशु) बनोगे कुंवरभाई ने आश्चर्य से पूछा कि तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? कानू ने शांति से कहा - तुम शराब-मांस का सेवन नहीं करते इसलिये नरक तो नहीं जाओगे और धर्म की रुचि नहीं है इसलिये मनुष्य और देवगति मिलेगी नहीं इसलिये मरकर ढ़ोर (पशु) ही बनोगे। रे भाई! अब भी संभल जाओ।

ईमानदारी

एक बार कुंवरजी व्यापार का सामान लाने मुम्बई गये तो कहान को भी साथ ले गये। मुम्बई से वापस लौटते समय रेल्वे के टीसी ने कहान से कहा कि तुम व्यापार के लिये इतना सामान लेकर जाते हो तो तुम टिकिट मत लिया करो और टिकिट से कम रुपये मुझे दे दिया करो और सामान का वजन भी मत करवाया करो, इससे तुम कम रुपये में घर पहुँच जाओगे।

तब कहान ने साफ शब्दों में कह दिया कि आज के बाद मुझसे ऐसी बात मत करना। इस सामान का जो किराया बनता है आप वह रुपये लेकर मुझे रसीद दे दो। कुंवरजी ने भी समझाया कि सामान का वजन मत करवाओ। परन्तु कहान ने स्पष्ट कह दिया कि मैं अनैतिक व्यापार नहीं करना चाहता और उन्होंने सामान का पूरा पैसा रेल्वे में जमा करवाया।

कानू का ध्येय

एक बार कानू अपने बड़े भाई खुशालभाई के साथ गांव घूमने गये। परस्पर चर्चा में खुशाल भाई ने कहा कि मैं बड़ा होकर बड़ा व्यापारी बनूँगा। अपने घर में बहुत गरीबी है उसे दूर करूँगा। उन्होंने कानू से पूछा - कानू! तुम क्या बनोगे? कानू गंभीरता से बोला - भाई! मैं तो ऐसा काम करूँगा जो आज तक किसी ने नहीं किया।

श्रीकण्ठ राजा को वैराग्य

एक नगर में व्यापारी के दो पुत्र थे। दोनों ही पुत्र जिनधर्मी थे, परन्तु उनमें से बड़ा भाई जिनधर्म में बहुत श्रद्धा रखता था और छोटा भाई विपरीत मार्ग पर था।एक दिन बड़ा भाई जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने के लिये जिनमंदिर जा रहा था। उसे देखकर छोटे भाई ने पूछा - भाई! आप कहाँ जा रहे हैं? तब बड़े भाई ने उत्तर दिया - मैं जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के लिये जिनमंदिर जा रहा हूँ क्योंकि मैं जिनेन्द्र भगवान के दर्शन-पूजन के बिना पानी भी ग्रहण नहीं करता।

छोटे भाई को सहज ही बड़े भाई के साथ जिनमंदिर जाने का भाव हुआ और वह अपने भाई के साथ जिनमंदिर दर्शन के लिये साथ चल पड़ा। रास्ते में उसने बड़े भाई से जिनेन्द्र भगवान, जैन धर्म, जिनेन्द्र पूजा, भगवान के स्वरूप के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न किये, जिनके उत्तर बड़े भाई ने अत्यंत स्नेहपूर्वक आगम के आधार से दिये। इन उत्तरों को सुनकर छोटे भाई को बहुत प्रसन्नता हुई और उसने निर्णय किया कि वह प्रतिदिन बड़े भाई के साथ जिनमंदिर जायेगा।

एक दिन जिनमंदिर में दिगम्बर मुनिराज के दर्शन और उपदेश का लाभ मिला। दोनों भाईयों ने उन मुनिराज से व्रत धारण किये। जिनमंदिर से लौटते समय छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि हम दोनों में यदि पहले आप स्वर्गवासी हो गये तो निरन्तर मुझे धर्म का सम्बोधन करना। कुछ वर्ष बाद दोनों भाईयों का देहविलय हो गया। बड़े भाई स्वर्ग में देव बन गये और छोटे भाई ने राजा के यहाँ जन्म लिया, बाद में वह राजा श्रीकण्ठ बना।

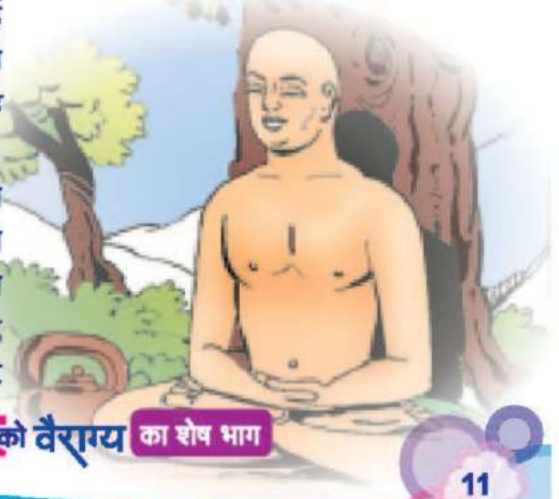

एक बार श्रीकण्ठ राजा अपने महल की छत पर घूम रहे थे, उसी समय राजा श्रीकण्ठ ने आकाश मार्ग से जाते हुये देव विमान देखे। मालूम करने पर पता चला कि अष्टान्हिका महापर्व पर

श्रीकण्ठ राजा को वैराग्य का शेष भाग

गौरवशाली इतिहास है हमारा

चहकती चेतना

- नेताजी सुभाषचन्दजी बोस निजी चिकित्सक डॉ. कर्नल राजमलजी कासलीवाल जैन श्रावक थे।
- आजादी के बाद 50 वर्षों में लगभग 35 सांसद, 4 राज्यपाल, 8 मुख्यमंत्री, 4 राजदूत, अनेक वैज्ञानिक हो चुके हैं।
- मध्यप्रदेश विधानसभा में 50 जैन विधायक निर्वाचित हो चुके हैं।
- आजाद हिन्द सैनिकों की जेल से रिहाई के लिये प्रयास किये जा रहे थे और उनकी सहायता के लिये लोगों से धन का सहयोग लिया जा रहा था। तब जबलपुर में क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी ने अपनी दो चादर में से एक चादर को नीलाम किया था। उस समय उस चादर के 3000 रुपये प्राप्त हुये जो सैनिकों के लिये भेजे गये।
- गांधी की दाण्डी यात्रा के समय महिलाओं के दल का नेतृत्व करने वाली प्रमुख महिला श्रीमति सरलादेवी साराभाई जैन श्राविका थीं। जिन्होंने गांधीजी तिलक करके आन्दोलन की सफलता की मंगल कामना की।
- आजाद हिन्द फौज की झांसी की रानी रेजीमेन्ट की सदस्या श्रीमति लीलावती जैन और रमा बहिन जैन थीं। जिनका काम था - हथियार लेकर केम्प की सुरक्षा करना और घायलों की देखभाल करना।
- मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मिश्रीलाल गंगवाल ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को राजकीय अतिथि को मांसाहार कराने से स्पष्ट मना कर दिया था।
- अमेरिका के शिकागो शहर में सितम्बर 1893 में प्रथम विश्व धर्म संसद का आयोजन किया गया। इसमें जैन धर्म का प्रतिनिधित्व श्री वीरचन्द गांधी ने किया।
- अंतर्राष्ट्रीय धर्मों के संगठन में जैन धर्म को दसवें धर्म की मान्यता दी गई है।

श्रीकण्ठ राजा को वैराग्य का शेष भाग

पहचान गया। उसे पूर्व भव में दिये हुये अपने वचन की याद गई और उसने राजा श्रीकण्ठ से मिलकर उसे नन्दीश्वर द्वीप जाने की बात बताई तो श्रीकण्ठ राजा ने भी जिनालयों की वन्दना का भाव व्यक्त किया। तब देव ने राजा श्रीकण्ठ को भी अपने विमान में बिठा लिया और नन्दीश्वर की ओर गमन किया।

जब मानुषोत्तर पर्वत आया तब विमान रुक गया, राजा श्रीकण्ठ को ज्ञात हुआ कि मनुष्य मानुषोत्तर पर्वत को नहीं लांघ सकते, यह सुनकर उन्हें वहीं वैराग्य हो गया और उन्होंने विमान से नीचे उतरकर वहीं विराजमान मुनि भगवन्त से जिनदीक्षा ले ली और वहीं आत्मध्यान में लीन हो गये।

चहकती चेतना

एक सेल्फी अरहन्तों के साथ भी.....

सेल्फी अर्थात् स्वयं ही अपने मोबाइल से अपनी या अपने ग्रुप की फोटो लेना। आज बच्चों और युवाओं में सेल्फी का क्रेज बढ़ता जा रहा है। आश्चर्य यह है जो शरीर अपना है ही नहीं उसकी फोटो लेने का शौक जानलेवा हो रहा है। क्या दोस्तों के साथ फोटो या दूसरों से हटकर कुछ करने का शौक इतना महत्वपूर्ण है कि इसके लिये प्राण ही दे दिये जायें। इसका मतलब यह हुआ कि आपके प्राण आपकी फोटो से भी सस्ते हैं..।

कुछ नया करने के शौक में युवा वर्ग विवेक खो बैठा है। सोशल नेटवर्क पर अधिक से अधिक लोग आपकी फोटो देखकर लाईक करें, बस इसी अंतहीन दौड़ में सभी शामिल हैं। अभी कुछ दिन पूर्व पूना के पास एक नदी पर पिकनिक गये कॉलेज के 14 छात्र-छात्राओं की पानी के अंदर सेल्फी के चक्कर में मौत हो गई। अमेरिका के वाशिंगटन में एक व्यक्ति बंदूक अपने सिर पर रखकर सेल्फी ले रहा था, अचानक गोली चलने से उसकी मौत हो गई। एक 15 वर्ष का लड़का रेल की पटरी पर ट्रेन के आने का अनुमान नहीं लगा पाया और सेल्फी के चक्कर में ट्रेन के नीचे कटकर मर गया। इस वर्ष दुनिया में अभी तक सेल्फी के चक्कर में हुई 27 घटनाओं में अनेक लोग अपनी जान गवां बैठे। दुःखद बात यह है कि इसमें आधे मामले भारत के हैं। रूस में सरकार ने पर्चे छपवाकर बटवाये जिसमें लिखा था "ए सेल्फी विद गन किल्स" यानी बन्दूक के साथ सेल्फी लेना मौत को निमंत्रण देना है।

हम किनके साथ कैसे लग रहे हैं?.. इसके बजाय स्वयं हम अपने आराध्य भगवन्तों के साथ खड़े होकर देखें और विचार करें कि आखिर वे भी आत्मा हैं और हम भी। फिर ऐसा कौन सा कार्य सर्वज्ञ प्रभु ने किया जिससे वे पूजनीय हो गये और हम संसार में घूम रहे हैं। तो जिनवाणी के आधार से एक ही उत्तर प्राप्त होगा कि प्रभु ने अपनी आत्मा के गुणों को पहचानकर उसमें रमने का पुरुषार्थ किया और हम इस शरीर को अपने जीवन की सम्पूर्ण सम्पत्ति मानकर उसमें अपनापन करके संसार में घूम रहे हैं। जो देह नाशवान है, प्रतिक्षण गल रही है और हम निरन्तर मृत्यु की ओर कदम बढ़ा रहे हैं उस देह के प्रति इतना पागलपन ही हमारी मूर्खता है।

शादी, पार्टी आदि अनेक अवसरों पर लोगों में फोटो खिंचवाने की होड़ लगी रहती है। पता नहीं कितने लोगों को वे फोटो देखने का सौभाग्य मिलता होगा और दूसरा आपकी फोटो क्यों देखेगा... फिर इस शौक का फायदा क्या? विचार करें.....

संपादक

प्रोटीन पाउडर से कमजोर होते बच्चे.....!

आज पूरे देश में ताकत बढ़ाने के लिये अनेक कम्पनियों के प्रोटीन पाउडर उपलब्ध हैं और बच्चों से लेकर युवा वर्ग तक के लोग इसका भरपूर उपयोग कर रहे हैं। माँ अपने बच्चों को स्वस्थ और बुद्धिमान बनाने के लिये प्रोटीन पाउडर खिला रहीं हैं तो युवा वर्ग अच्छे मसल्स और बॉलीवुड हीरो जैसे सिक्स पैक बनाने के लोभ में प्रोटीन पाउडर, विटामिन की गोलियाँ, एनर्जी ड्रिंक जैसे डाइट्री सप्लीमेंट्स ले रहे हैं।

डॉक्टर भले ही प्रोटीन पाउडर डॉक्टर या फिटनेस ट्रेनर की सलाह के बिना लेने को मना करते हों इसके बावजूद इसका व्यापार बढ़ता जा रहा है और एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष इसकी सालाना खपत 3 हजार करोड़ रुपये की है। विज्ञापन और दूसरों से अच्छा दिखने की दौड़ में किसी के पास इतना समय नहीं है कि वे इन प्रोटीन्स पाउडर की सच्चाई पता करें।

गुड़गांव के 19 वर्षीय राजेश कुमार को डायबिटीज और ब्लडप्रेशर की समस्या के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टर भी इतनी कम उम्र में इन बीमारियों के होने पर आश्चर्यचकित थे। पूछने पर राजेश ने बताया कि राजेश दो साल से प्रोटीन पाउडर का सेवन कर रहा है।

दिल्ली के 12 वर्ष के हामिद को किडनी की समस्या के कारण बीएलके अस्पताल में भर्ती कराया गया। हामिद भी एक साल से प्रोटीन पाउडर का सेवन कर रहा था।

अपोलो अस्पताल के अनुसार डॉ.अनीता के अनुसार किसी भी व्यक्ति को पूरे दिन में करीब 15 प्रतिशत प्रोटीन की आवश्यकता होती है, इससे ज्यादा सेवन शरीर को नुकसान पहुँचाता है।

बिना डॉक्टर की सलाह के प्रोटीन पाउडर के ये नुकसान हो सकते हैं -

● शरीर में काब्रोहाइड्रेट, वसा और कैलोरी की कमी। ● हार्मोनल सिस्टम को खतरा। ● लीवर और किडनी को खतरा। ● मल्टीआर्गन इफेक्ट। ● पाचन क्रिया पर भी असर।

सावधान हो सकता है ये ताकत की दवायें ही आपको कमजोर न बना दें। घर का बना अथवा प्राकृतिक फल, सब्जी, दूध का सेवन कीजिये और स्वस्थ रहिये।

भूल सुधार

पूर्व अंक में प्रकाशित धृतराष्ट्र की कथा हिन्दू ग्रन्थों के आधार से दी गई है। यह कथा मात्र प्रेरणा के स्तर पर लें। जैन साहित्य में ऐसी कथा का उल्लेख नहीं है।

पागलपन

एक राजा का शासन बहुत सख्त था। उसकी इच्छा के विरुद्ध राज्य में छोटे सा छोटा सा काम नहीं हो सकता था। वह जिस ओर देखता उस ओर के लोग डर के कारण अपना सर नीचे झुका लेते थे। उसे इस बात का भ्रम हो गया कि वह बहुत शक्तिवान है और उसकी इच्छा के बिना राज्य का पत्ता भी नहीं हिल सकता, यहाँ तक कि सूर्य भी उसकी इच्छा से ही उसके राज्य में आयेगा। सब मेरे आधीन हैं।

एक बार राज्य की नदी में बाढ़ आ गई। पानी बढ़ते-बढ़ते राज्य की राजधानी की ओर चढ़ता ही जा रहा था। चारों ओर लोग अपनी जान बचाने के लिये भागने लगे। कुछ लोग भागकर राजा के पास गये और बोले - महाराज! आप तो भगवान हैं, आपके डर से सारा भूमण्डल कांपता है। ये नदी और समुद्र भी आपके गुलाम है। तो फिर इस नदी की हिम्मत कैसे हो गई कि वह आपकी आज्ञा के बिना अपना पानी राजधानी में लेकर आ रही है? महाराज कुछ तो सोचिये और हमें बचाईये।

राजा अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया और घमण्ड से बोला - नदी की ये हिम्मत कि हमारी आज्ञा के बिना राजधानी में आ जाये। सैनिको! हमारा सिंहासन उठाओ और जहाँ बाढ़ आई है वहाँ पहुँचाओ। हमारी तलवार हमारे हाथ में दे दो, हम उसे हटायेंगे और अपनी ताकत को दिखायेंगे।

सिंहासन नदी के पास पहुँचा दिया गया और राजा ने सिंहासन पर बैठे ही तलवार निकाली और जोर से बोला - ओ नदी की बच्ची! अपनी इज्जत चाहती हो तो हट जा यहाँ से। वरना समझ ले तुझे बहुत भयंकर दण्ड मिलेगा।

राजा चिल्लाता रहा और नदी का पानी बढ़कर सिंहासन तक पहुँच गया, तब राजा का गुस्सा और बढ़ गया वह बोला - हम तुम्हें मिटा देंगे।

पानी बढ़ता ही रहा और राजा के गले तक पहुँच गया। राजा गुस्से में तलवार पानी में मारता रहा। नदी राजा को बहाकर ले गई और घमण्डी राजा की मृत्यु हो गई। लोगों ने कहा कि राजा मूर्ख था, पागल था।

ऐसे ही सर्वज्ञ परमात्मा हम सबसे कहते हैं कि संसार के सारे अज्ञानी जीवों का भ्रम हो गया है कि मेरी इच्छा से कार्य होते हैं, मैं परिवार को पालता हूँ, मैं पुत्रों कमाकर देता हूँ, मेरे बिना किसी का काम नहीं चलता। जबकि प्रत्येक कार्य स्वतन्त्र है और अपनी योग्यता से अपने समय पर होते हैं। फिर भी यह अज्ञानी जीव संसार सागर में डूब रहा है। क्या हम भी मूर्ख और पागल तो नहीं हैं... विचार कीजिये.....।

आप तो संसार ही बढ़ाइये.....

भगवान नेमिनाथ की दिव्यध्वनि में आया कि द्वारका नगरी और यादव कुल 12 वर्ष बाद भस्म हो जायेगा। यह सुनकर प्रद्युम्नकुमार को वैराग्य हो गया, वे दीक्षा लेने के पूर्व परिवार से आज्ञा लेने के लिये राज्यसभा पहुँचे और अपने पिता श्रीकृष्ण से कहा - आप मुझे जिनदीक्षा लेने की आज्ञा प्रदान कीजिये। बलभद्र और नारायण श्रीकृष्ण ने कहा - हम राजगद्दी पर बैठें और तुम दीक्षा लोगे। तब प्रद्युम्न ने कहा - आपको अपना संसार बढ़ाना हो तो बढ़ायें, मैं तो दीक्षा लेने जा रहा हूँ।

परिग्रह से मुक्ति

ग्रीस के महान संत डायोजनीस ने एक नदी के पास एक नग्न बच्चे को देखा। वह बच्चा एक हाथ में रोटी लेकर दूसरे हाथ से नदी का पानी पी रहा था। उन्होंने सोचा कि जब एक बालक का बिना गिलास, बिना कपड़े से काम चल सकता है तो मुझे वस्त्र और गिलास की क्या आवश्यकता? यह सोचकर वे अपना लंगोट और गिलास का परिग्रह वहीं छोड़कर जंगल की ओर बढ़ गये। वे हमेशा बालक की तरह नग्न और परिग्रह रहित रहते थे।

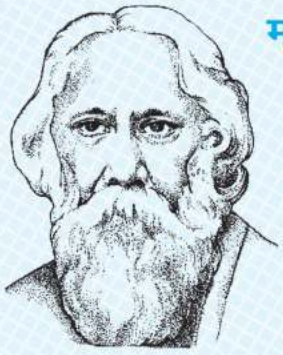

मारने का अधिकार नहीं

कोलकाता के शांतिनिकेतन में एक कुत्ता बहुत बीमार था। उसे बहुत तकलीफ थी, उसे छटपटाते देखकर एक प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ टैगोर से बोले - गुरूदेव! इसका कष्ट देखा नहीं जाता, इसे तो गोली मार देना चाहिये, जिससे इसे दर्द से मुक्त मिल जायेगी। गुरूदेव बोले - भाई! यदि इस कुत्ते की जगह हमारे या तुम्हारे परिवार का कोई व्यक्ति हो और वह इसी तरह दर्द से चिल्ला रहा हो तो क्या उसे गोली मार देना चाहिये? कोई भी जीव कितनी भी तकलीफ में क्यों न हो, वह मरना नहीं चाहता और किसी जीव को मारने का अधिकार हमें नहीं है।

यह सुनकर प्रोफेसर अपना सिर झुका लिया।

नौकर से मिली शिक्षा

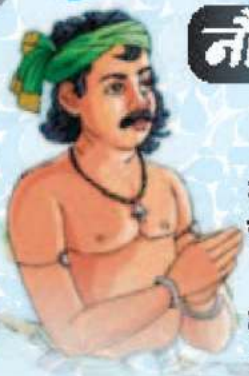

सेठजी ने अपने नौकर रामू को आवाज लगाई तो रामू हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया।

रामू! क्या तुम जानते हो कि आज मेरा जन्म दिन है? सेठजी ने रामू से पूछा। तो रामू ने कहा - सेठजी! मुझे सवेरे पाँच बजे उठाया तथा सफाई करने और पानी गरम करने के लिये कहा तो मैं समझ गया कि आज घर में कोई खास बात है, पर सेठानीजी ने मेरी शंका का समाधान करते हुये बताया कि आज सेठजी का जन्मदिन है।

रामू के पिता ने सेठजी से कर्ज लिया था और वे कर्ज वापस नहीं कर सके। अपने जीवन के अंतिम दिनों में रामू के पिता ने सेठजी से कहा था कि सेठजी! मैं रामू को आपके हाथों में सौंपता हूँ, यह जीवनभर आपकी सेवा करेगा। तभी से रामू सेठजी के यहाँ रात-दिन ईमानदारी से सेवा कर रहा था। सेठजी भी रामू के काम से बहुत प्रसन्न थे।

सेठजी ने रामू से कहा - आज मेरा जन्मदिवस है इसलिये तुझे जो भी भोजन अच्छा लगता है वही चीज चौके में बनवाऊँगा। बोलो! तुम्हें क्या अच्छा लगता है ? रामू बोला - मालिक! आपके यहाँ प्रतिदिन जो दाल-रोटी खाने को मिलती है वही मेरे लिये पकवान के समान है। मैं अपनी पसन्द क्या बताऊँ?

अच्छा! आज मैं खुशी के अवसर पर तुम्हें अच्छी ड्रेस सिलवाना चाहता हूँ बताओ! तुम्हें क्या पसन्द है ? सूट, कुर्ता-पैजामा या शेरवानी। रामू संकोच से बोला - जो धोती-कुर्ता पहनने के लिये देते हैं, वही मेरे लिये राजा की ड्रेस से कम नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिये। मुझे यहाँ कुछ कमी नहीं है।

इस प्रकार का उत्तर सुनकर सेठ ने रामू को गले से लगाने के लिये दोनों हाथ फैलाये तो रामू दो कदम पीछे हो गया और बोला- मालिक! आप यह क्या कर रहे हैं ? सेठजी की आंखों में आंसू आ गये, वे बोले रामू! आज तुमने एक महान शिक्षा दी है कि

चहकती चेतना के पाठक की कलम से

चहकती चेतना हर पल पर, जिनवाणी सन्देश है। सर्वोदय यह अहिंसा समता सुधा अभिषेक है।।
नित्य जिनवाणी मनन चेतना आहार है।प्राणप्रद वायु यही, जिनदेशना का सार है।।
चहकती नित चेतना, कुछ कह रही अब चेतना। यह राग की विध्वंसिनी, प्रभु वीतरागी देशना।।

- विनोद मोदी, वरायतपुर जि. सागर म.प्र.

सदस्यगण विशेष ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 1901 से 2000 तक के की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है अतः उन्हें पत्रिका आगे भेजना संभव नहीं होगा। साथ ही सदस्य क्रमांक से तक के सदस्यता अवधि शीघ्र समाप्त होने वाली है। अतः पत्रिका प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी सदस्यता राशि हमारे बैंक खाते में जमा करके अथवा चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्रमांक - 1937001010106 IFSC PUNB0193700
सदस्यता शुल्क - 400/- रु. तीन वर्ष हेतु 1200/- रु. दस वर्ष हेतु

राशि जमा करके अपना सदस्यता क्रमांक अथवा अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर **SMS** या **What's App** करें।

प्रतिभा सम्पन्न बालक आर्जव

परिवार संस्कारों की पहली पाठशाला है। यदि परिवार के वातावरण धार्मिक और सदाचारमय हो तो बच्चों में संस्कार सहज ही प्रवेश कर जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है जयपुर निवासी 11 वर्षीय आर्जव गोधा। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. संजीव गोधा और श्रीमति संस्कृति गोधा के सुपुत्र आर्जव को आचार्य कुन्दकुन्द की 101 गाथाओं का पद्यानुवाद याद है, साथ ही उसे अनेक स्तुतियाँ, स्तोत्र पाठ, तत्वार्थ सूत्र के दो अध्याय, अनेक पूजाओं के अर्थ के साथ-साथ जिनशासन के अनेक सिद्धान्त कंठस्थ हैं।

आर्जव के पारिवारिक सदाचारी वातावरण और गहरे धार्मिक संस्कारों के उसने जन्म से ही रात्रि भोजन और जमीकन्द का त्याग है। वह पिज्जा, बर्गर, चाउमीन जैसी लोकप्रिय अभक्ष्य पदार्थों का स्वाद तक नहीं जानता।

ज्ञातव्य है कि आर्जव गोधा किशनगढ़ निवासी श्रेष्ठी श्री प्रदीप चौधरी का नाती है। चहकती चेतना परिवार की ओर से आर्जव के मंगलमय भविष्य की कामना।

सिद्ध प्रभु की संस्कृति, स्वानुभव की नींव।
आर्जव धर्म धारण करो, हो जीवन संजीव।।

तीर्थंकर के जन्म के समय देवों द्वारा बजाये जाने वाले 29 प्रकार के बाजे

◆ ढोल ◆ नगारा ◆ ढोलक ◆ ढफली ◆ डमरू ◆ डुगडुगी ◆ मृदंग ◆ तबला ◆ तासे ◆ मुरज ◆ तोमड़ी ◆ घड़ा ◆ खंजरी ◆ चौकी ◆ चंग ◆ नौबत ◆ ढांक ◆ पौमवई ◆ दौरा ◆ खेल ◆ दायरा ◆ उदकई ◆ सिंग ◆ गिड़कट्टी ◆ संतूर ◆ गोलथम ◆ ढपला ◆ नारी ◆ तुमक

आपके प्रश्न – आगम के उत्तर

प्रश्नः1- मच्छर मारने के लिये आल आउट आदि प्रयोग करना विरोधी हिंसा है या संकल्पी हिंसा ?

उत्तर - यह निश्चित रूप से संकल्पी हिंसा है। ऐसी हिंसा जैन धर्म का अनुयायी नहीं कर सकता। देश, धर्म,समाज को सुरक्षित करने के भाव से जो हिंसा हो जाती है उसे विरोधी हिंसा कहते हैं। यहाँ भाव रक्षा करना होता है।

प्रश्नः2- क्या किसी बालक को भगवान महावीर या मुनिराज का पात्र बनाया जा सकता है ?

उत्तर - दिगम्बर महापुरुषों का अभिनय नहीं किया जाना चाहिये। यह उनकी अविनय है।

प्रश्नः3- भरत चक्रवर्ती ने 72 जिनबिम्ब बनवाये थे, उनमें से कोई जिनबिम्ब अभी भी हैं या नहीं ?

उत्तर - भरत चक्रवर्ती ने उस समय की भूत, भविष्य और वर्तमान काल की चौबीसी के 72 जिनमंदिर बनवाये थे। ये सभी जिनमंदिर कृत्रिम होने के कारण लम्बे काल के बाद नष्ट हो गये।

प्रश्नः 4- जल को उबालने में क्या जलकायिक जीवों की हिंसा पाप नहीं लगता ?

उत्तर - गृहस्थ एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा से नहीं बच सकता। आरम्भी हिंसा का पाप तो लगता ही है।

प्रश्नः 5 क्या दिगम्बर मुनि चश्मा का प्रयोग कर सकते हैं ?

उत्तर - मुनिराज के लिये पीछी और कमण्डलु शास्त्र के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुयें परिग्रह हैं और मुनिराज सभी चौबीस प्रकार के परिग्रह के त्यागी होते हैं। आचार्य शान्तिसागरजी ने अपनी आंखें कमजोर होने पर समाधि ले ली थी।

प्रश्नः 6 क्या रोज पूजन करना जरूरी है

उत्तर - श्रावक के छः आवश्यकों में प्रथम आवश्यक देव पूजा है, जो प्रतिदिन करना चाहिये। यदि आपको समय नहीं है तो आप अवकाश के दिनों और विशेष पर्व के दिनों में अवश्य पूजन करें। पूजन के साथ स्वाध्याय भी रोज ही करना चाहिये इसमें हमारा ही हित है। - ज्योति जैन, अहमदाबाद

प्रश्नः 7 पंचमकाल में मनुष्य कितने स्वर्ग और कितने नर्क जा सकता है?

उत्तर पंचमकाल में सोलहवें स्वर्ग और तीसरे नरक तक जा सकता है।

प्रश्नः 8 दीक्षा के समय पुराना नाम क्यों बदल दिया जाता है ?

उत्तर - गृहस्थी से समस्त प्रकार का सम्बन्ध टूट जाता है इसलिये नाम भी बदल दिया जाता है।

पोन्नूरमलै तीर्थ में संपन्न हुआ रत्नत्रय मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर

महामुनि आचार्य कुन्दकुन्द की तप एवं साधना भूमि पोन्नूरमलै तीर्थ पर दिनांक 20 फरवरी से 25 फरवरी तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर संपन्न हुआ। श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में आयोजित इस शिविर में प्रतिदिन प्रातः जिनेन्द्र पूजन और पण्डित आशाधरजी द्वारा विरचित रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। साथ ही पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा समयसार पर, डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर सात तत्व सम्बन्धी भूलों पर तथा डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर कक्षा ली गई। प्रौढ़कक्षा के अन्तर्गत प्रातः ब्र. हेमचन्दजी देवलाली, पण्डित सुरेश शास्त्री गुना, पण्डित सुकुमाल शास्त्री गुना, पण्डित नन्दकिशोरजी काटोल, पण्डित विराग शास्त्री, पण्डित अंकुर शास्त्री भोपाल के व्याख्यान का विशेष लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के अन्तर्गत "तत्वज्ञान की रुचि बने कैसे, बढ़े कैसे" विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में पण्डित देवांग शास्त्री मुम्बई, पण्डित सौरभ शास्त्री खइैरी, पण्डित अंकुर शास्त्री भोपाल ने अपने उपयोगी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित श्री अनंतराय ए. सेठ ने आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर की स्थापना की तात्कालीन परिस्थितियों की रोचक घटना सुनकर सभी द्रवित हो गये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये। पोन्नूर शिविर के व्याख्यानों की सीडी प्राप्त करने के लिये आप 9300642434 पर सम्पर्क करें।

चहकती चेतना का केलेण्डर का विमोचन

सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र धार्मिक बाल-किशोर वर्ग की पत्रिका चहकती चेतना का आकर्षक रंगीन केलेण्डर का प्रकाशन किया गया है। इसका विमोचन दिनांक 24 फरवरी को श्री अनंतराय सेठ मुम्बई के करकमलों से किया गया।

इस केलेण्डर में अप्रेल 2016 से मार्च 2017 तक की माह की तिथियाँ हैं। प्रत्येक पेज पर प्रतिमाह आने वाले विशेष पर्वों के आधार से फोटो दिये गये हैं साथ प्रतिमाह में आने वाले तीर्थंकरों के कल्याणकों की तिथि और विशेष पर्व भी दिये गये हैं।यह केलेण्डर संस्था सदस्यों एवं चहकती चेतना के आजीवन सदस्यों को निःशुल्क भेजा जा रहा है।

खेलों से बीमार होते बच्चे...!

कहा जाता है कि खेलकूद से शरीर की मांसपेशियाँ पुष्ट होतीं हैं । शीरीरिक विकास व्यवस्थित होता है और बीमारी भी नहीं आती हैं। खेलकूद बच्चों के तन और मन दोनों के लिये आवश्यक है। पर बच्चे आज कई घंटे खेलने के बाद भी स्वस्थ और विकसित नहीं हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य हो रहा होगा कि ऐसा कैसे हो सकता है? परन्तु आज के बच्चे मैदानी खेल नहीं खेलकर सारे खेल मोबाइल और कम्प्यूटर में खेल रहे हैं। क्रिक्रेट, फुटबाल, टेबल टेनिस जैसे खेल भी मोबाइल में खेले जाने लगे हैं। मोबाइल पर ही खेल के हार का दुःख और जीत की खुशी अकेले ही भोगी जाने लगी है। इनसे बच्चों का शारीरिक विकास तो प्रभावित हो रहा है साथ ही उनकी मानसिक स्थिति भी अच्छी नहीं है। उनका मन अपराध की मुड़ने लगा है। सब बच्चों के साथ मेलजोल, सामाजिक सम्पर्क, धैर्य-जैसी बातें कम हो रहीं हैं। बच्चे चिड़चिड़े, जिद्दी, अनुशासनहीन और हिंसक बन रहे हैं। अभिभावक भी अपनी व्यस्तता के कारण या बच्चों की जिद से बचने के लिये मोबाइल देकर उनसे मुक्त अनुभव करने लगे हैं। अभिभावकों को यही बचने का उपाय घातक सिद्ध हो रहा है। मोबाइल उनकी लत बनता जा रहा है। पता नहीं चल पाता कि हिंसक वीडियो गेम खेलने से बच्चों को अपराध की ओर धकेल रहा है।

क्या बच्चों को जन्म देना और स्कूल भेजना ही हमारी कर्तव्यपूर्ति है..? क्या उनमें सदाचार, नैतिकता, धर्म, कर्तव्यबोध, देश-समाज-परिवार के प्रति कर्तव्य के संस्कार जागृत करना अभिभावकों की जिम्मेदारी नहीं है..? क्या विरासत में धन देना ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य है..? यह जिम्मेदारी केवल माँ की ही नहीं बल्कि पूरे परिवार की है। आज सबके पास समय की बहुत कमी है परन्तु हमें अपनी दिनचर्या में से ही बच्चों के लिये समय निकालना होगा। यदि हम आज समय नहीं दे पाये तो भविष्य की अनअपेक्षित घटनाओं के लिये हमें तैयार रहना चाहिये।

इन सब बातों पर गम्भीरता से विचार करने की और अपेक्षित सुधार करने की आवश्यकता है। आज के बच्चे तकनीक के गुलाम हो रहे हैं और छोटी उम्र में ही बड़े हो रहे हैं। यदि आज हम बच्चों को समय नहीं दे पाये तो शायद हमारे वृद्ध होने पर बच्चे भी हमें समय शायद ही दे पायें।

- विराग शास्त्री

सावधान!

सॉफ्ट ड्रिंक की लत से रोज हो रही 504 मौतें

गर्मी का मौसम शुरू होने वाला है और सॉफ्ट ड्रिंक्स की कम्पनियों ने अपने विज्ञापन करना प्रारम्भ कर दिये हैं और अधिकांश व्यक्तियों के लिये गर्मी लगने पर को पेप्सी, कोका कोला पीना आम बात है। पर शायद आप यह नहीं जानते कि यह प्यास बुझाने का आसान कितना खतरनाक हो सकता है। विश्वविख्यात हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के शोध के मुताबिक सॉफ्ट ड्रिंक्स पीने से ब्लड शुगर बढ़ जाता है और इन्सुलिन के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता भी विकसित होने लगती है। धीरे-धीरे व्यक्ति डायबिटीज और हृदय रोगों की चपेट में आने लगता है। अमेरिका की टपट्स यूनिविर्सिटी के अध्ययन के अनुसार सॉफ्ट ड्रिंक्स की लत से हर साल 1.33 लाख मौतें हो जाती हैं, साथ ही सॉफ्ट ड्रिंक्स से होने वाले हृदय रोग से 45000 और कैंसर से 6500 लोग मर जाते हैं। मतलब कुल 1 लाख 84 हजार मौतों के लिये कोल्ड ड्रिंक्स जिम्मेदार है।

भारत में इंडियन मेडिकल काउंसिल के अनुसार पिछले दो दशक में डायबिटीज के रोगी बढ़े। 1995 में डायबिटीज टाइप 2 के शिकार 1.94 करोड़ भारतीय थे। 2014 में 6.68 करोड़ लोग शिकार थे और वर्तमान में 7.7 करोड़ कुल डायबिटीज के मरीज हैं। अंतर्राष्ट्रीय डायबिटीज फाउन्डेशन के अनुसार 10 लाख लोग प्रतिवर्ष मरते हैं। महिलाओं के लिये सॉफ्ट ड्रिंक्स ज्यादा खतरनाक है। भारत में काम करने वाली संस्था डायबिटीज केयर ने 3 लाख मौतों का जिम्मेदार कोल्ड ड्रिंक, डिब्बाबंद जूस और हेल्थ ड्रिंक को माना है, इनसे हड्डियों, मांसपेशियों, दांतों, आंखों, किडनी की बीमारी हो रही है।

सॉफ्ट ड्रिंक्स की बिक्री को कम करने के लिये मैक्सिको सरकार ने सॉफ्ट ड्रिंक पर 10 प्रतिशत टेक्स बढ़ा दिया, जिससे उसकी बिक्री कम हो गई।

एक शोध के अनुसार सॉफ्ट ड्रिंक के 240 मिली के केन में लगभग 100 से 150 केलोरी होती है । एक सामान्य व्यक्ति 22 मिनिट में 12 मील साइकिल चलाये तब इतनी केलोरी खर्च होती है या सामान्य व्यक्ति 8 मील प्रतिघंटे की रफ्तार से 20 मिनिट लगातार चले तब या कोई व्यक्ति जिम में लगातार 22 मिनट तक पुशअप करे तब इतनी केलोरी इस्तेमाल होती है और इतनी मेहनत शायद ही कोई करता हो। परिणामस्वरूप यह केलोरी शरीर को नुकसानदायक होने लगती है।

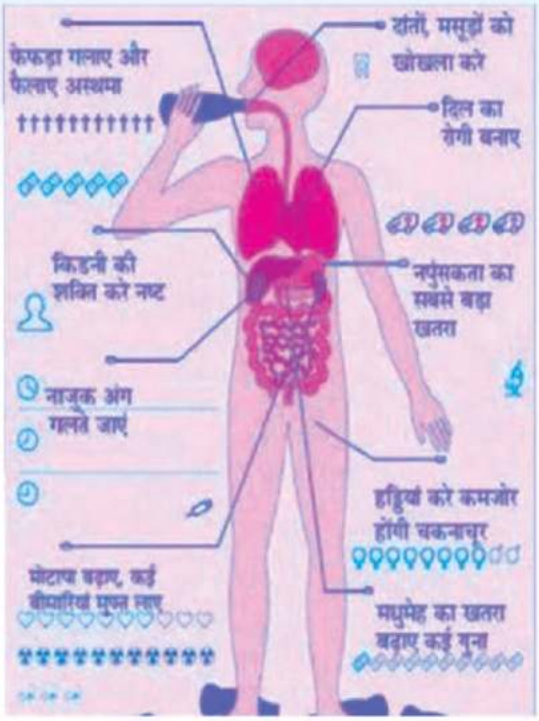

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मानकों के अनुसार कोल्ड ड्रिंक्स में सोडियम बेंजोएट का प्रयोग 5 मिली ग्राम प्रति किलो होना चाहिये परन्तु इसका प्रयोग 2119 मिली ग्राम प्रतिकिलो हो रहा है यानि मानक से 424 गुना अधिक। इसका प्रयोग तीखापन लाने के लिये होता है। सोडियम बेंजोएट का अधिक प्रयोग कैंसरकारक भी हो सकता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घटाता है। वैज्ञानिक डॉ. आशीष यादव के अनुसार सोडियम बेंजोएट इम्यून सिस्टम पर खतरनाकर असर डालता है। इसे अमेरिका में बैन कर दिया गया है।

कोई यह भी कह सकता है कि मरना तो सभी को है चाहे कैसे भी मरें तो हम जिन्दगी ऐश-आराम से क्यों न जियें ? यह बात सच है कि सबको मरना ही है तो आप स्वयं निर्णय करें कि इस जीवन का अंतिम क्षण बीमारियों के साथ अस्पताल में गुजरे या पंचपरमेष्ठी भगवन्तों की संगति में, उनके स्मरण में और अपनी आत्मा के चिन्तन में मरण हो। जीवन आपका है तो फैसला भी आपको ही करना होगा...।

अष्ट मंगल द्रव्य का महत्व व अर्थ

जैन धर्म में मंगल चिन्हों की नामावली में अष्टमंगल द्रव्यों का विशिष्ट स्थान है। तीर्थंकर भगवान के जन्म के समय दिक्कुमारियाँ इन्हीं अष्ट मंगल द्रव्यों को लेकर इन्द्राणी के आगे चलती हैं। भगवान के समवशरण में भी चारों दिशाओं में गोपुर द्वारों पर यह रखे जाते हैं। यह अष्ट मंगल द्रव्य निम्नानुसार हैं -

कलश - कलश सृजन, सौभाग्य एवं पूर्णता का संकेत करता है। इसका उल्लेख धवला और पंचास्तिकाय संग्रह ग्रन्थ में मिलता है।

छत्र - यह श्रेष्ठता का प्रतीक है। यह जिनेन्द्र भगवान की तीन लोक में प्रभुता को व्यक्त करता है।

ध्वजा - भगवान के तीनों लोकों के स्वामित्व को प्रगट करती है।

दर्पण - यह आत्मदर्शन का प्रतीक है।

व्यजन पंखा - शीतलता का प्रतीक है।

चमर - चमर भगवान के वैभव का सूचित करता है।

झारी - यह एक प्रकार का पात्र है जिसमें जल रहता है, इससे भगवान के चरण धोये जाते हैं व अभिषेक कराया जाता है। यह पवित्रता का सूचक है।

झोना - यह भगवान की उच्चता और श्रेष्ठता का प्रतीक है।

छगनलालजी को धन्यवाद

तत्वज्ञान प्रचार-प्रसार के अनेक उपाय हैं। कोई अपने ज्ञान से, कोई दान देकर, कोई प्रवचन करके, विधान आदि के माध्यम से प्रचार कर रहे हैं। इस क्रम में अहमदाबाद निवासी श्री छगनलाल टी. जैन ने नई पहल की है। श्री छगनलालजी बीमा कंपनी के एजेन्ट हैं। इस वर्ष एजेन्ट के रूप में उन्होंने उल्लेखनीय 15 वर्ष पूर्ण किये हैं।इस सफलता पर उन्होंने अपने सभी 250 जैन ग्राहकों को उपहार के रूप में चहकती चेतना की एक वर्ष की सदस्यता प्रदान की है। उनका मानना है कि कोई अन्य गिफ्ट जैसे घड़ी, डायरी, पेन, कलेण्डर आदि से विशेष लाभ ग्राहकों को नहीं मिलता और ये सभी वस्तुयें सभी के पास तो होतीं ही हैं। परन्तु चहकती चेतना की अल्प मूल्य में एक वर्ष में चार बार साधर्मियों के घर पहुँचेगी और पूरा परिवार इसका लाभ लेगा।

श्री छगनलालजी को चहकती चेतना की ओर से धन्यवाद। उनका यह कार्य निःसन्देह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है।

एक ऐसा घर

: जहाँ सारे सदस्य करते हैं संस्कृत में बात

सभी भाषाओं की जननी कही जाने वाली संस्कृत भले ही आज उपेक्षित है परन्तु राजस्थान के जोधपुर का एक परिवार अपनी आपसी बात संस्कृत में ही करता है। ब्रह्मपुरी बिचलावास स्थित सोहनलाल व्यास का परिवार संस्कृत भाषा के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिये कार्य कर रहा है। घर के सारे सदस्य परस्पर में तो संस्कृत में ही बात करते हैं साथ ही पारिवारिक विवाह, जन्मदिवस, आदि कार्यों के आमंत्रण पत्र भी संस्कृत में ही ही छपवाते हैं और गीत-संगीत भी संस्कृत में ही होते हैं। आने वाले मेहमानों से भी अधिकांश संस्कृत में ही उपविशतु, जलं स्वीकरोतु, अत्र आगच्छतु आदि कहकर उनका सन्मान करते हैं। परिवार के सदस्य भुवनेश सरकारी विद्यालय में संस्कृत अध्यापक हैं। उनके बच्चे संस्कृत के साथ अंग्रेजी में धाराप्रवाह बोल सकते हैं।

आगामी बाल शिविर -

बाल संस्कार शिविर

18 अप्रेल से 22 अप्रेल 2016 - पंढरपुर महा.
26 अप्रेल से 3 मई 2016 - देवलाली जि. नासिक महा.
03 मई से 10 मई 2016 - जबलपुर (म.प्र.)
22 मई से 29 मई 2016 - हिंगोली (महा.)
05 जून से 12 जून 2016 - भोपाल (म.प्र.)
01 जून से 10 जून 2016 - गुना (म.प्र.)

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर

15 मई से 1 जून 2016 - विदिशा (म.प्र.)

चार माह की बच्ची को
2 माह में 20 हार्टअटैक
फिर भी सही सलामत

महाराष्ट्र के सोलापुर में एक चार माह की बच्ची को दो महीने में 20 बार हार्ट अटैक हुआ उसके बाद भी वह जीवित है। शहर के एक अस्पताल में अदिति की इस बच्ची को कार्डियक सर्जरी की गई है। अदिति को जन्म के समय से ही दिल की कोशिकाओं से जुड़ी ऐसी बीमारी थी जो औसतन तीन लाख बच्चों में से एक बच्चे को होती है।इस बीमारी के कारण दिल तक पहुँचने वाले खून का प्रवाह बहुत कम हो जाता है। डॉक्टरों के अनुसार अदिति लगभग 10 माह के बाद सामान्य जीवन जी सकेगी।

इसे कहते हैं जिसकी आयु शेष है, मार सके न कोय।

मोबाइल से गाने सुनते समय विस्फोट से छात्र की मृत्यु

लखनऊ के सरना चौक में रहने वाले संजय कुमार के पुत्र विशाल की यह घटना है।11वीं के छात्र विशाल अपने मोबाइल से ईयरफोन लगाकर गाना सुन रहा था। बैटरी डाउन होने पर उसने मोबाइल को चार्ज में लगा दिया और गाने सुनता रहा। परिवार के बाकी लोग आंगन में बैठे थे अचानक विशाल की चीख सुनकर सभी अंदर कमरे की ओर भागे तो देखा कि विशाल का पूरा चेहरा जला हुआ था और वह बेहोश हो गया था। कुछ ही देर बाद पास के अस्पताल में उसकी मौत हो गई।

सावधानियाँ - ● चार्जिंग पर फोन लगा हो तो न ही मोबाइल पर बात करें और ना गेम खेलें, न ही गाना सुनें। ● रात को सोते समय तकिया के पास मोबाइल रखकर न सोयें। बिस्तर के पास मोबाइल चार्ज करने के लिये न लगायें। ● यह जीवन जिनवाणी के अभ्यासपूर्वक समाधि मरण के लिये मिला है, इसलिये सावधान रहें।

सहयोग प्राप्त

11,000/-	आरव पारस शाह के जन्म के प्रसंग पर हस्ते पल्लवी बहन श्री पृथ्वीराज बी. शाह, सोनगढ़
5100/-	श्रीमति पुष्पलता अजितकुमार जैन, छिन्दवाड़ा सदस्य के रूप में प्राप्त।
2000/-	डॉ. धनकुमारजी जैन, सूरत
1000/-	ज्ञायक संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर गुज.

समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता
एक आश्चर्यकारी किन्तु सत्य घटना

मजदूरी करने गया और 1 करोड़ की लाटरी लगी

बंगाल से काम की तलाश में केरल गये एक युवक की 1 करोड़ की लाटरी लग गई। पश्चिम जिले में मालदा जिले के लक्ष्मीपुर में रहने वाले एक मुस्लिम युवक मुफिजल काम की तलाश में मजदूरी करने 4 मार्च को केरल पहुँचा। वेल्लीमाडाकुन्नु के रास्ते पर उसने देखा कि एक बूढ़ा विकलांग व्यक्ति सरकारी लाटरी का टिकट बेच रहा है। उसे उस बूढ़े व्यक्ति पर दया आ गई और उसने सहायता करने के परिणाम से 50 रु. का टिकट खरीद लिया। अगले दिन 5 मार्च को जब लाटरी का ड्रा निकली तो उसका 1 करोड़ का इनाम निकला। उसे इस बात का विश्वास ही नहीं हुआ। बाद में वह पुलिस सुरक्षा में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में टिकट जमा करने गया और उसने वहाँ अपना एकाउंट खुलवाया।

जिनशासन का सिद्धान्त है पुण्यवानों के पीछे लक्ष्मी भागकर आती है। देखा आपने कर्म उदय के न्यारे खेल....।

बाल कलम से

माता को सोलह सपने आये जन्मेंगे महावीर
शोर हुआ जागो जागो अब जन्मे महावीर।
कुण्डलपुर में बधाई हुई जन्मे महावीर हैं।
इन्द्र नरेन्द्र बधाई देते जन्मे महावीर हैं।
पाण्डुक शिला अभिषेक हेतु इन्द्र ले जायेंगे।
एक हजार आठ कलशों से न्हवन करायेंगे।
वर्धमान की मुद्रा देख मन को शांति मिलती है।
मन शांत होते ही आतमा मिलती है।।

रचनाकार - सहज संदीप जैन
छिन्दवाड़ा कहान शिशु विहार
सोनगढ़, विद्यार्थी

जगन्नाथपुरी की संस्कृति जैन संस्कृति से प्रभावित है

उड़ीसा का जगन्नाथपुरी हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। हर वर्ष यहाँ लाखों हिन्दूधर्म प्रेमी यहाँ दर्शन के लिये आते हैं साथ यहाँ प्रतिवर्ष भगवान जगन्नाथ की विशाल रथ यात्रा निकाली जाती है।

जैन चेअर उत्कल यूनिवर्सिटी ऑफ कल्चर द्वारा आयोजित एक सेमिनार में विशेष शोध करने वाले विद्वानों डॉ. इन्द्रजीत मोहंतो और डॉ आदित्य मोहंतो ने यह स्पष्ट किया कि जगन्नाथ पर जैन संस्कृति, सिद्धान्तों, आचार-विचारों का विशेष प्रभाव रहा है। ईसा पूर्व उड़ीसा में जैन संस्कृति ही प्रचलित थी। उड़ीसा के कई प्रसिद्ध मंदिरों में जैन मूर्तियाँ हैं जिन्हें भगवान शिव के नाम पर पूजा जा रहा है। जैसे - कोरापूत, पोडासिन गिडी आदि। जगन्नाथ संस्कृति के प्रचारक या संस्थापक श्री निलामाधव एक दिगम्बर जैन सन्त थे। जगन्नाथ शब्द ही जैन संस्कृति का उद्घोष करता है क्योंकि यह शब्द मात्र जैन तीर्थंकरों के लिये ही प्रयोग किया जाता था।अन्य संस्कृति में भगवान के साथ नाथ शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। जगन्नाथ मंदिर की दक्षिणी शिखर की दीवार पर जैन तीर्थंकर की मूर्ति उत्कीर्ण है। ऐसे कई प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुये डॉ. मोहन्तो ने स्पष्ट किया कि जगन्नाथ की संस्कृति जैन संस्कृति ही है।

इस अवसर पर डॉ. सुचित्रा दास द्वारा सम्पादित ओडिसा संस्कृति पर जैन संस्कृति का प्रभाव नामक अंग्रेजी पुस्तक का विमोचन भारतवर्षीय दिगम्र जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी सेठी के द्वारा किया गया।

हे भगवान मेरी मम्मी का व्हॅट्सप बंद करो
एक घंटे से नहा धोकर नंगा घूम रहा हूँ ।

वसन्त ऋतु - रानी झूला झूल रही है। गले में बहुत ही सुन्दर रत्नों का हार पड़ा है। उधर से गुजरती वेश्या ने हार देखा और...
अंजन निरंजन हो गया
(नि:शंकित अंग)
चित्रांकन - बने सिंह
अहा। हा। हा। कितना सुन्दर हार है यह तो बस मुझे मिलना ही चाहिये। मैं इसके बिना चैन से नहीं रह सकती। फिर... हाँ इसको तो रानी के गले से मेरा प्रेमी अंजन ही चुरा कर ला सकता है उससे ही कुछ जुगाड़ फिट करती हूं।
वेश्या लौट आई अपने कोठे पर, सुस्त सी गुमसुम सी लेट गई पलंग पर। अंजन चोर आया, देखा उसे लेटे हुए और.
हैं। यह क्या? मालूम होता है आज तुम्हारे दुश्मनों की तबियत कुछ अलील सी दीखती है। क्या बात है प्राण प्यारी?
अच्छा आ गये आप बड़ी डींग मारा करते हो अपने प्रेम की। मैं तो तुम्हारे प्रेम को सच्चा तब मानू जब तुम मेरे लिये रानी के गले का हार चुरा कर ला दो।
काम तो तुमने बड़ी जोखिम का बता दिया. पकड़े जाने का पूरा डर है। परन्तु प्रिये मैं तुम्हारे लिये अपनी जान को भी दाव पर लगा सकता हूं।

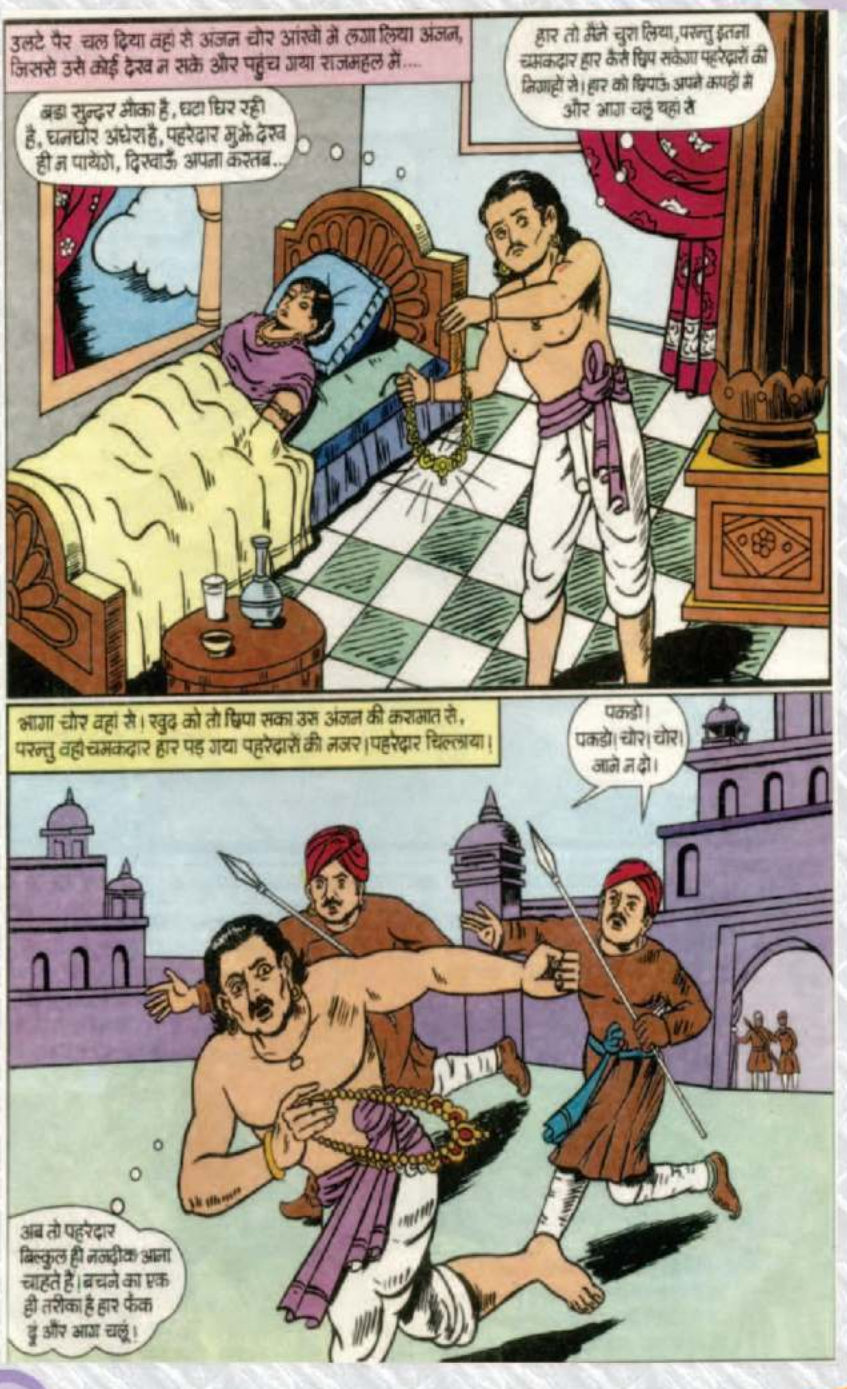
उलटे पैर चल दिया वहां से अंजन चोर आंखों में लगा लिया अंजन, जिससे उसे कोई देख न सके और पहुंच गया राजमहल में....
बड़ा सुन्दर मौका है, घटा घिर रही है, घनघोर अंधेरा है, पहरेदार मुझे देख ही न पायेंगे, दिखाऊँ अपना करतब...
हार तो मैंने चुरा लिया, परन्तु इतना चमकदार हार कैसे छिप सकेगा पहरेदारों की निगाहों से। हार को छिपाऊं अपने कपड़ों में और भाग चलूं यहां से
भागा चोर वहां से। खुद को तो छिपा सका उस अंजन की करामात से, परन्तु वहां चमकदार हार पड़ गया पहरेदारों की नजर। पहरेदार चिल्लाया।
पकड़ो। पकड़ो। चोर। चोर। जाने न दो।
अब तो पहरेदार बिल्कुल ही नजदीक आना चाहते हैं। बचने का एक ही तरीका है हार फेंक दूं और भाग चलूं।

हार फेंक, सरपट दौड़ने लगा, दौड़ते-दौड़ते पहुंच गया श्मशान में और वहां...
हैं! यह कौन है? क्या कर रहा है? चलूं उसके पास और उससे ही पूछूं
भैया यह क्या तमाशा है कभी तुम इस झींके से उतरते हो कभी उस पर चढ़ते हो?
अरे भाई क्या बताऊं मैं आकाश गामिनी विद्या सिद्ध कर रहा हूं।

भैया कैसे सिद्ध होगी वह विद्या जरा मैं भी तो सुनूं?
यदि तुम जानना ही चाहते हो तो सुनो। मैं सेठ सोमदत्त हूं। मुझे सेठ जिनदत्त ने बतलाया है कि इस झींके की 108 लड़ियों को णमोकार मंत्र पढ़-पढ़ कर एक एक लड़ी काटते जाना है। जब अन्तिम लड़ी कट जायेगी तो आकाश गामिनी विद्या तुम्हें रास्ते में ही रोक लेगी।

तो सेठ जी। काट क्यों नहीं देते इन लड़ियों को और क्यों नहीं कर लेते सिद्ध यह विद्या?
तुम तो बड़े भोले हो भाई। ठीक है जिनदत्त ने कहा है, परन्तु यदि उसकी बात झूठ हुई तो देखते नहीं ये भयंकर तेज नुकीले अस्त्र जो नीचे गड़े हैं, उन पर मैं जा गिरूंगा और मृत्यु को प्राप्त हो जाऊंगा। यही डर मुझे सता रहा है, यही शंका मेरे मन में घर करे है।

सेठ जी यदि आप चाहो तो मुझे यह मंत्र दे दो. मैं यह विद्या सिद्ध कर लूंगा मुझे सेठ जी की बात पर जरा भी शंका नहीं है।
हां! हां! क्यों नहीं। शौक से करो विद्या सिद्ध। लो यह मंत्र 'णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।
अंजन चोर छींके पर बैठ गया, पढ़ा लिखा तो था नहीं भूल गया मंत्र। परन्तु अटल श्रद्धा थी सेठ जिनदत्त के कहे वचनों पर। बस...
'ताणं ताणं' कछु न जाणं, सेठ वचन प्रमाणं' लो यह कटी पहली कड़ी फिर दूसरी फिर तीसरी और... यह अन्तिम!
भैया कमाल हो गया तुम्हें आकाश गामिनी विद्या ने रास्ते में ही संभाल लिया। अब तुम आकाश मार्ग से कहीं भी जा सकते हो।
अंजन चोर विचारने लगा...
क्यों न सबसे पहले अपने उपकारी जिनदत्त के पास चलूं जिनकी कृपा से विद्या सिद्ध हुई।
और विद्या उसे ले गई सेठ जिनदत्त के पास

सेठ जी प्रणाम। आपकी कृपा से मुझे आकाश गामिनी विद्या सिद्ध हुई है। अब तो आप मुझे वह तरीका बताइये जिससे मैं संसार समुद्र से पार हो जाऊं
तुमने बहुत सुन्दर विचार चलो तुम्हें आचार्य श्री के पास ले चलूं जो तुम्हें मोक्ष को प्रदान करने वाली मुनि-दीक्षा प्रदान करेंगे

अंजन और सेठ जिनदत्त दोनों पहुंचे आचार्य श्री के पास और...
महाराज आपके पास ये अंजन जो मुनि-दीक्षा लेने का अभिलाषी है आया हैं।
हां! हां! बेटा तुम्हारा कल्याण हो वस्त्राभूषण उतारो, केश लौंच करो और संभालो यह पीछी और कमंडल

मुनि-दीक्षा का दृश्य

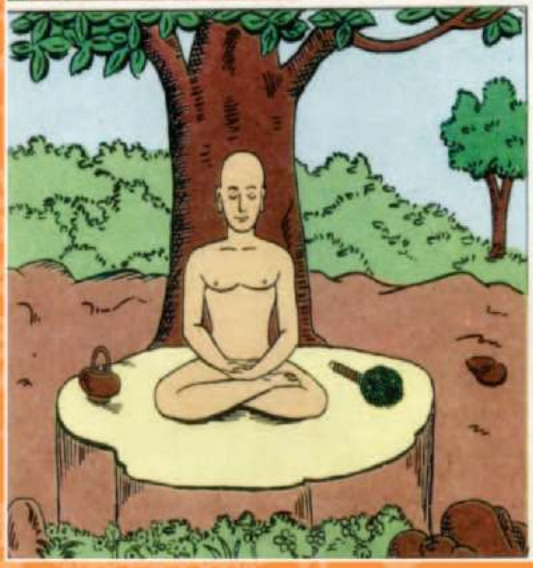

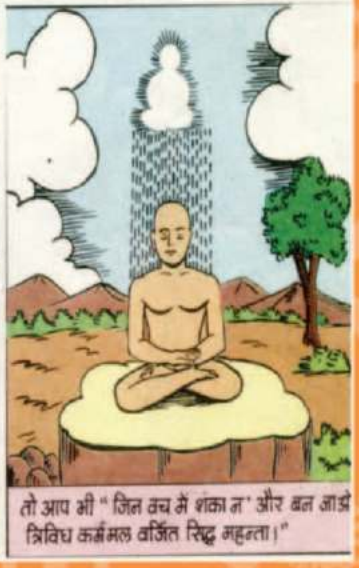
तो आप भी "जिन वच में शंका न" और बन जाओ त्रिविध कर्ममल वर्जित सिद्ध महन्ता।"

चहकती चेतना पत्रिका का

आकर्षक रंगीन कलेण्डर

विशेषतायें -

- अप्रेल 2016 से मार्च 2017 तक माह की तिथियाँ
- प्रत्येक पेज पर प्रतिमाह आने वाले विशेष पर्वों के आधार से प्रेरणादायी चित्र
- प्रतिमाह में आने वाले तीर्थंकरों के कल्याणकों की तिथि
- विशेष पर्वों की तिथियाँ

मूल्य मात्र 25/-

आप अपने पारिवारिक आयोजनों, बाल शिविरों अथवा अन्य अवसरों पर साधर्मियों को वितरण जिनधर्म की प्रभावना करें।

संपर्क : संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434

kahansandesh@gmail.com

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा जिनवाणी संरक्षण के क्षेत्र में अभिनव पहल

क्या आपके यहाँ धार्मिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं ? क्या उन पत्र-पत्रिकाओं की यथा-योग्य विनय नहीं कर पा रहे हैं ?
क्या आप अपने घर या जिनमंदिर में एकत्रित पत्र-पत्रिकाओं का योग्य समाधान चाहते हैं तो अब आप निश्चिंत हो जाईये।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र

अनेक विद्वानों एवं प्रबुद्ध साधर्मियों के विचारों के अध्ययन के पश्चात् हमारी संस्था ने आपके इस विकल्प के उचित समाधान के लिये जबलपुर में जिनवाणी संरक्षण केन्द्र की स्थापना की है जिसके माध्यम से इन पत्र-पत्रिकाओं का उचित समा